सुरों की मलिका की पुण्यतिथि पर बही गजलों की सरिता

भातखंडे संस्कृति विवि में उस्ताद अहमद हुसैन व उस्ताद मोहम्मद हुसैन ने दी प्रस्तुति

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: सुरों की मलिका पद्मभूषण बेगम अख्तर को पुण्यतिथि पर गुरुवार को भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में गजल से श्रद्धांजलि दी गई। पद्मश्री उस्ताद अहमद हुसैन और उस्ताद मोहम्मद हुसैन ने गायकी से बेगम की यादें ताजा कर दीं।

कला मंडपम प्रेक्षागृह में विवि की कुलपति प्रो. मांडवी सिंह के साथ उस्ताद अहमद हुसैन एवं उस्ताद मोहम्मद हुसैन ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। बेगम अख्तर के चित्र पर पुष्प भी अर्पित किए। संगीतमय गणेश वंदना के बाद कलाकारों ने शकील बदायूनी की रचना दूर है मंज़िल, राहें मुश्किल, आलम है तन्हाई का... प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त चल मेरे साथ ही चल, ऐ मेरी जाने ग़ज़ल, यूं ही बेसबब न फिरा करो, कोई शाम घर में रहा करो, मौसम आएंगे-जाएंगे हम तुमको भूल न पाएंगे, आया तेरे दर पर दीवाना तथा क्या तुझ पर नज़्म लिखूं और कैसा गीत लिखूं जैसी रचनाओं की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने सभागार में समां बांध दिया।



कलामंडपम में बेगम अख्तर की याद में आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते उस्ताद अहमद हुसैन और उस्ताद मोहम्मद हुसैन।

दोनों कलाकारों की सधी हुई आवाज़, भावपूर्ण अभिव्यक्ति और गायकी की विशिष्ट शैली ने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. मांडवी सिंह ने कहा कि पद्मभूषण बेगम अख्तर भारतीय संगीत जगत की महान विभूति थीं।

उनका भातखंडे से गहरा जुड़ाव रहा और उन्होंने यहां अपनी सेवायें भी प्रदान की थीं। अपनी अद्वितीय गायकी से उन्होंने ग़ज़ल, ठुमरी एवं दादरा को विशिष्ट पहचान दिलाई। उन्होंने कहा कि बेगम अख्तर की संगीत साधना, कला के प्रति समर्पण और उनकी समृद्ध विरासत विश्वविद्यालय के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगी। सुनीता झिंगरन, प्रो. कुमकुम धर एवं युगांतर सिंदूर अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय की गायन विभागाध्यक्ष प्रो. सृष्टि माथुर, तालवाद्य विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार मिश्र, नृत्य विभाग की शिक्षिका मंजुला पंत तथा नृत्य विभागाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र दत्त बाजपेई आदि मौजूद रहे।